पाठ 2. नटखट मंगरू

पाठ का परिचय

जंगल में सियारों के सभी बच्चों में मंगरू सबसे नटखट व चंचल था। वह किसी का भी कहना नहीं मानता था। एक दिन वह अँधेरा होते ही अपनी माँद में से निकलकर घूमने चला गया। अचानक मौसम बदला। तेज़ आँधी आई और वर्षा होने लगी। मंगरू फँस गया। मंगरू के माता-पिता को चिंता होने लगी। उन्होंने सभी सियारों से मंगरू को ढूँढ़ने के लिए मदद माँगी। सभी सियार उसे ढूँढ़ने निकल पड़े। मंगरू उन्हें पेड़ के खोखले तने में छिपा बैठा मिला। मंगरू भी अपने साथियों को देख बाहर आकर उनसे लिपटकर रोने लगा। उसने कसम खाई कि वह कभी भी मनमानी नहीं करेगा।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

बच्चों को मनमानी नहीं करनी चाहिए। बड़ों का कहना मानना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों की सोच तथा बड़ों की सोच में बहुत अंतर होता है। बड़े हमेशा अपने बच्चों की भलाई चाहते हैं। कोई भी गलत कदम उठाने से पहले बच्चों को सोच लेना चाहिए।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका आदर्श वाचन करें। वाचन करते हुए हर कठिन शब्द का अर्थ बताएँ। कठिन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। प्रत्येक शब्द के सही उच्चारण पर ध्यान दें। बच्चों से एक-एक कर तीन-चार पंक्तियाँ पढ़वाएँ। उनके उच्चारण को शुद्ध करें। वाचन करते समय शब्दों के उच्चारण में उतार-चढ़ाव से बच्चों को परिचित करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से जानें–

- कौन-कौन अपने घर में शैतानी करता है?
- किस-किस प्रकार की शैतानी करता है?
- शैतानी करने पर उन्हें कैसा लगता है?
- उनके माता-पिता उनके शैतानी करने पर क्या कहते हैं?
- माता-पिता की नसीहत वे कितनी मानते हैं?